5

अधीन बनो और भक्तिपूर्ण जीवन जीयो (1 पतरस 2:11-25)

अधीनता मसीही जीवन की आवश्यक सामग्री है।

अधीनता पर शिक्षाएं देने से पहले पतरस ने सही परिप्रेक्ष्य में अधीनता को रखने में सहायता के लिए और निर्देश दिए।

ऐसा भक्तिपूर्ण जीवन बिताओ जिस पर कोई आरोप न लगा सके (2:11, 12)

पतरस ने दो बार पहले ही मनुष्य के अस्थायी स्वभाव का संकेत दिया था। अपने पाठकों को उसने परदेशी कहा, जिनका कोई वास्तविक विश्रामस्थल नहीं है और न वास्तव में उनका कोई सम्मान है। आरम्भिक शब्द इस प्रकार हैं, ''उन परदेशियों के नाम'' (1:1)। 1:17 में उसने जोड़ा ''अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ'' और 2:11 में कहा, ''हे प्रियो मैं तुम से विनती करता हूं कि तुम अपने आपको परदेशी और यात्री जानकर ... सांसारिक अभिलाषाओं ... से बचे रहो।''

पुरखाओं के पुराने नियम के संसार में पतरस के विचारों में योगदान दिया था। उस समय परदेशी लोग डरते थे और डरने का लोगों के पास हर कारण था। उनकी सम्पत्ति जब्त की जा सकती थी या उनकी हत्या हो सकती थी और किसी ने विरोध नहीं करना था। जब अकाल के कारण अब्राहम को मिस्र में जाना पड़ा, तो वह डर गया था कि एक शक्तिशाली राजा जो सारा को अपने हरम में रखने का इच्छुक था, उसे मार डालेगा। मिस्र में वह परदेशी था, पर केवल मिस्र में ही नहीं कनान में जब उसकी पत्नी की मृत्यु हुई तो उस देश के रहने वालों से अनुमति लिए बिना वह उसे दफ़ना नहीं पाया था। उसने उन्हें बताया, ''मैं तुम्हारे बीच पाहुन और परदेशी हूं: मुझे अपने मध्य में कब्रिस्तान के लिए ऐसी भूमि दो जो मेरी निज की हो जाए कि मैं अपने मुर्दे को गाड़कर अपनी आंख की ओट करूं'' (उत्पत्ति 23:4)।

इस्राएली कौम को मिस्र में परदेशी होने के अपने अनुभव याद थे। यह स्मरण उन्हें परदेशियों के साथ दयालुतापूर्वक व्यवहार करने के लिए प्रेरित करने के लिए था (लैव्यव्यवस्था 19:34)। वास्तव में परमेश्वर ने इस्राएलियों को यह भूलने देने से इनकार कर दिया कि उसके लोग पृथ्वी पर कभी आराम से नहीं बैठ सकते। लैव्यव्यवस्था 25:23 में परमेश्वर ने बताया कि भूमि को पक्के तौर पर क्यों नहीं बेचा जा सकता: ''क्योंकि भूमि मेरी है; और उस में तुम परदेशी और बाहरी होगे।''

पतरस और उसके पाठकों को समकालीन संसार की जानकारी इन शब्दों में जान डाल देती है। यूनानो-रोमी संसार में किसी महत्वपूर्ण नगर का नागरिक होना बड़े गर्व की बात थी।

क्लौदियुस लुसियुस को पौलुस ने याद दिलाया, ''मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूं! किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का निवासी हूं'' (प्रेरितों 21:39)। यूनानी आदर्श हर नागरिक को सार्वजनिक मामलों में अपनी आवाज़ उठाने के लिए कहता था। अपने नगर पर गर्व करना इस बात से बढ़ जाता था कि नगर में रहने वाले हर व्यक्ति या उसके आस-पास के लोगों को नागरिकता का अधिकार नहीं था। अल्पकालिक और अप्रवासियों को नगर का पद नहीं मिलता था और इसके भविष्य में उनकी कोई आवाज नहीं थी। वे परदेशी और बाहरी रहने वाले होते थे।

पतरस ने तर्क दिया कि किसी व्यक्ति के लिए जीवन के ऐसे ढंग में अपने आपको दे देना जिसमें उसे कोई पक्का पद न मिले किसी काम का नहीं। इसके अलावा उसने ध्यान दिलाया कि शरीर की इच्छाएं उस प्राण के विरुद्ध ''युद्ध करती हैं'' जो आत्मिक और सनातन है (2:11)। अस्थाई और सदा रहने वाले, मुरझाने वाले और कभी न बदलने वाले में अन्तर है। पतरस ने अपने पाठकों से निवेदन किया, ''अपना भरोसा अनादि पर डाल दो, जो तुम्हारे विनाश के लिए तुला हुआ है उससे बचे रहो।''

ऐसे जीना जैसे इस संसार के आनन्द ही जीवन हों, मूर्खतापूर्ण है। हमारे लिए भक्तिपूर्ण जीवन जीने के और कारण हैं। जब मसीही लोगों के जीवन अच्छे होते हैं तो इससे परमेश्वर की महिमा होती है और उसके नाम को महिमा मिलनी चाहिए (2:12)। इसके अलावा भलाई दुष्टता की घृणा और विरोध को अपने आप सामने ला देगी। यह खमीर की तरह काम करेगी और दूसरों को अपने दायरे में ले आएगी। पतरस ने मसीही लोगों को शारीरिक लालसाओं से मुक्त जीवन जीने के लिए केवल इसलिए नहीं कहा कि वह एक परदेशी था। यह तो अंधकार से भरे संसार में सच्चाई और भलाई का अद्‌भुत प्रकाश लाने में उसके परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध और सहभागिता के कारण भी था।

यह विचार कि मसीही लोगों के भले जीवनों से खोए हुए लोग मसीह में आएंगे आयत 12 के ''कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें'' वाक्यांश के दो सम्भावित अर्थों में से एक है। यदि खोए हुओं को मसीह के पास लाया जाता है तो पाप से उनका उद्धार होने से परमेश्वर की महिमा होगी। एक और सम्भावित बात है कि दुष्ट अर्थात पाप में खोए और आशाहीन लोग समय का अन्त होने पर परमेश्वर की धार्मिकता और भले ढंगों को मानेंगे। पतरस के कहने का अर्थ यह हो सकता है कि उनका खोया होना अपने आप में परमेश्वर की महिमा की गवाही होगा। दोनों मामलों में पतरस ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि समय का अन्त आ रहा है और उनका जीवन प्रभु के आने को ध्यान में रखकर होना चाहिए।

सही काम करो और अज्ञानता का मुंह बन्द करो (2:13-17)

मसीही व्यक्ति के पास संसार के पास से सिफारिश करने के लिए संदेश और जीने का ढंग दोनों हैं। वास्तव में दोनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता, परन्तु संसार को मसीही व्यक्ति के जीवन के ढंग के बजाय मसीह के संदेश को नज़रअन्दाज करना आसान लगता है। पतरस ने अपने पाठकों को मसीही जीवनों से अज्ञानी लोगों द्वारा झूठी निंदा का मुंह बन्द करते हुए देखा। जब हम इसकी पृष्ठभूमि को समझ लेते हैं, तो हम ''मनुष्यों के ठहराए हुए हरेक प्रबन्ध के अधीन'' (2:13) होने के पतरस के अग्रह पर विषय को थोड़ा सा बदला देखते हैं।

अधिकार के अधीन होने में भक्तिपूर्ण जीवन भी शामिल है। अपने स्वभाव से सरकारें देशभक्ति की मांग करती हैं। मानने के लिए कानून हैं, किए जाने के लिए समारोह हैं और देने के लिए टैक्स हैं। नये नियम की सामान्य साक्षी यह है कि मसीही लोगों को सरकारों को अपना समर्थन देना चाहिए। यदि परिस्थिति ऐसी हो कि परमेश्वर की बात मानने या मनुष्य की बात मानने में किसी एक को चुनना हो तो हमें सही ढंग से बने अधिकार की बात नहीं माननी चाहिए। ऐसा समय हमारे ऊपर आ सकता है, जैसे प्रेरितों 5:29 में पतरस और यूहन्ना के लिए आया था, परन्तु यह बार-बार नहीं आता। रोमियों 13:1-7, 1 तीमुथियुस 2:1, 2 और तीतुस 3:1 अधिकार वाले लोगों के लिए प्रार्थना करने और भली-मंशा रखने की सिफारिश करते हैं। दुरुपयोग के लिए सामर्थ होने के बावजूद, अधिकारियों को ''कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिए'' (2:14) नियुक्त किया गया है। इस काम के लिए उन्हें मसीहियों का समर्थन, भली मंशा और प्रार्थनाएं उनके साथ हैं।

रोमी एशिया माइनर में मसीही लोगों पर सरकारों के लिए विनाशक होने के दोष लग सकते थे। राजा का उल्लेख ही भौंहे चढ़ाने के लिए काफ़ी था। मकदुनिया में रोम की सरकार के केन्द्र, थिस्सलुनीके में मसीही लोगों पर यह आरोप लगा था। ''और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं'' (प्रेरितों 17:7)। शायद कुछ मसीही लोगों ने संसार की शक्तियों के लिए घृणा जताकर स्थिति बिगाड़ दी थी।

जब चीज़ें वैसे हों जैसे उन्हें होना चाहिए, तो मसीही लोगों को छोटे-बड़े सब मामलों में कानून द्वारा स्थापित बातों को मानना चाहिए। वे इस पर निर्णय नहीं देते, बल्कि अच्छे नागरिकों के रूप में इसकी बात मानते हैं। इसके विपरीत करने का अर्थ प्रभु और उसके लोगों को अनावश्यक बदनामी और आलोचना का सामना करना पड़ता है। 2:15 में पतरस ने कहा, ''क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने से'' अपने आपको अधीन करो।

अधीनता के संदर्भ में पहली नज़र में अजीब लगता है कि पतरस ने 2:16 में स्वतंत्रता की बात की: ''अपने आपको स्वतन्त्र जानो।'' इन शब्दों से सुझाव मिलता है कि उचित दायरे के भीतर अधीनता स्वतन्त्रता पर आक्रमण नहीं है। वास्तव में स्वतन्त्रता को सबसे बड़ा खतरा उस आत्मसंतुष्टि भरी गैर-ज़िम्मेदारी से है, जो संतुष्टि के पल के आगे सोचने से इनकार करती है।

नये नियम में, स्वतन्त्रता को व्यवस्था और संयम के संदर्भ के भीतर एक आदर्श के रूप में रखा जाता है। याकूब ने ''स्वतन्त्रता की व्यवस्था'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया (याकूब 1:25; 2:12; यूनानी शब्द वही है जिसका अनुवाद 1 पतरस 2:16 में ''स्वतन्त्र'' हुआ है)। यह कहना बहुत बड़ी बात नहीं है कि कोई व्यक्ति केवल व्यवस्था के संदर्भ में ही स्वतन्त्र हो सकता है। परमेश्वर के लोगों को संयम और ठोस निर्णय के साथ अपनी स्वतन्त्रता का इस्तेमाल करने के लिए बुलाया जाता है। मसीही स्वतन्त्रता के नाम पर लाइसेंस और स्वार्थ को कभी उचित नहीं ठहराया जाना चाहिए। वास्तव में मसीही व्यक्ति परमेश्वर का गुलाम है (2:16)।

परमेश्वर का दास अर्थात गुलाम होने का अर्थ स्वतन्त्र होना है! और दासत्व मेल खाती आशीष की पेशकश नहीं करता। पाप की निर्दयी दासता को आश्चर्यजनक बल के साथ सबक सिखाया जा सकता है। कुछ साल पहले मैं विजयी मुस्कान वाली एक जवान महिला को जानता था। मैंने उसे कुछ समय से देखा नहीं था और फिर मैंने उसे अपने घर के पास पगडंडी पर चलते

देखा। उसके झुर्रियां पड़ी हुई थीं और बूढ़ी लग रही थी। उसके कदमों से ताज़गी गायब थी और उसके चेहरे पर मुस्कान भी नहीं थी। उसका तरोताज़ा रहने का घमण्ड भरा जीवन कठोर हो गया था। उसने दवाइयां लेने की कोशिश की थी और वे किसी काम नहीं आई थीं। उसकी जीवन शैली की दासता ने जीने के उसके स्वाद को छीन लिया था और उसे दुखी और निराश कर दिया था। पाप की दासता लगातार बनी रहने वाली है।

स्वतन्त्रता और आनन्द का जीवन 2:17 में दिए चार आदेशों के संदर्भ में आता है: ''सबका आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।'' NIV यूनानी धर्मशास्त्र के बारीक थोड़े से अन्तर को जोड़ देता है: ''सब के प्रति आदर दिखाओ: विश्वासियों के भाईचारे से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो।'' NIV में कॉलन से पहले का वाक्यांश KJV के वाक्यांश ''सबका आदर करो'' से मेल खाता है। NIV में पहले वाक्यांश की व्याख्या और विस्तार के रूप में अन्तिम तीन आदेश दिए गए हैं। अन्य शब्दों में भाइयों से प्रेम रखकर, परमेश्वर से डरकर और राजा का सम्मान करके हम सब का आदर करते हैं। हमारे लिए अपने मसीही परिवार से प्रेम करना, परमेश्वर का डर रखना और सरकार का सम्मान करना उचित और भक्तिपूर्ण है।

प्रभु के नमूने को देखो (2:18-25)

अधीनता पर पतरस ने अपनी शिक्षा अभी खत्म नहीं की थी। हर मसीही परमेश्वर का दास है, परन्तु पतरस के कुछ पाठक शारीरिक अर्थ में दास थे (2:18)। उनमें से कुछ को वास्तव में जानवरों की तरह रखा गया था। सरकार के अधीन होना एक बात है जबकि बेरहम मालिक के अधीन होना दूसरी बात है। भला और दयालु परमेश्वर अपने स्वतन्त्र लोगों में से किसी के दूसरे के सम्पत्ति होने के अमानवीय पहलू से संतुष्ट होने की उम्मीद कैसे कर सकता है?

पतरस का संदेश यह है: स्वतन्त्रता और प्रतिष्ठा बाहरी पस्थितियों पर आधारित नहीं। कोई धनवान और शक्तिशाली व्यक्ति सबसे तरस योग्य दास हो सकता है जबकि शक्ति या सम्पत्ति के बिना भी कोई दास जीवन की सबसे प्रिय समझी जाने वाली और ईर्ष्या किए जाने वाली आशिषों का आनन्द ले सकता है। अपने समर्पण से दास परमेश्वर की महिमा कर सकता है और उस स्वतन्त्रता को महसूस कर सकता है, जो परमेश्वर उसे देता है।

कुछ लोगों को जब तक वे अपनी इच्छाओं से मेल खाती बातें करना चाहते हैं, दूसरों के काम करने में कठिनाई आती है। अच्छे स्वामी के अधीन होने में एक दास को कम दिक्कत होती है। पतरस ने कहा कि किसी की जो भी तारीफ़ हो, जो भी आशीष हो, वह समर्पण करना पीड़ादायक और अपमानजनक समर्पण से ही आएगा (2:19)। मसीही व्यक्ति के विश्वास की वास्तविक परीक्षा और प्रकृति तभी मिलती है जब स्वाभाविक इच्छाएं उसे एक दिशा में ले जा रही हों और मसीह में उसका विश्वास उसे दूसरी ओर ले जा रहा हो। पतरस ने मसीही दासों को कठोर स्वामियों के अधीन होने का आग्रह किया और यदि इससे कष्ट मिलता है तो सही काम करने के लिए उसे सहने को कहा न कि गलत काम करने को।

कइयों को यह अजीब लगा है कि नये नियम के लेखकों ने परमेश्वर की दृष्टि में दासता को गलत नहीं ठहराया। दासों को पौलुस का निर्देश वही था, जो पतरस का था (इफिसियों 6:5-

8; कुलुस्सियों 3:22-25; 1 तीमुथियुस 6:1, 2)। यह कि न तो पतरस ने और न ही पौलुस ने दासता की निंदा की, जो इस बात की गवाही है कि सुसमाचार मनुष्य के भीतरी जीवन को बदलने की इच्छा से दिया गया न कि उसकी बाहरी परिस्थतियों को बदलने के लिए। उस व्यक्ति का जीवन कितना तरसयोग्य है, जो नये से नये सामान, आलीशान गाड़ी, बढ़िया से बढ़िया घर और महंगे से महंगे कपड़ों के लिए जीता है। वह कितना तरसयोग्य है जो अपनी दुर्दशा का कारण अपने काम या अपने विवाह, अपने मित्रों को बताता है। ऐसे व्यक्ति ने इस झूठ पर विश्वास कर लिया है कि प्रसन्नता का रहस्य बाहरी बातें हैं।

जब दासता के कष्ट ने उसकी सहनशीलता को परखा, तो दास को मसीह का कष्ट याद आया (2:21)। प्रभु को भारी बोझों ने नहीं हराया था। न उसने हारना था। वास्तव में मसीह ने सब लोगों के पापों के लिए जिसमें दास के पाप भी थे, कष्ट सहा। प्रभु ने यह नमूना ठहरा दिया है कि परमेश्वर को महिमा देते हुए कष्ट कैसे सहना है। जब उसे गालियां दी जा रही थीं तो उसने गाली के बदले गाली देने के लिए अपना मुंह नहीं खोला था। उसने मनुष्यों के अन्याय को उसके हाथ में दे दिया था जिसने सबका न्याय करना था (2:22, 23)।

दासता के संदर्भ में पतरस ने पहले मसीह के कष्ट की बात की, परन्तु क्रूस पर उसकी मृत्यु के प्रभाव हैं जो उस नमूने से कहीं आगे जाते हैं जो इसने दिया है ताकि दास उसके पदचिह्नों पर चलें। यीशु जो यशायाह 53:9 वाला पाप रहित दास है, दुख सह रहा था। उसने कोई पाप नहीं किया। उसके मुंह से छल की कोई बात नहीं निकली। यशायाह 53 की आत्मा 2:11-25 में सांस देती है। पुराने नियम का वह महान वचन ही है जो फिलिप्पुस के द्वारा उसे सिखाए जाने के समय हबशी खोजा पढ़ रहा था (प्रेरितों 8:32, 33)।

सुसमाचार अर्थात शुभसमाचार जो प्रभु ने हर पीढ़ी के मसीही लोगों को अपने अपने संसार में लाने के लिए सौंपा है, यह है कि क्रूस पर परमेश्वर का पुत्र उन पापों के कारण मरा जो उसके अपने नहीं थे। उसका कष्ट हमारे पापों की कीमत चुकाने के लिए था। हर मनुष्य के पाप परमेश्वर के मेमने में विश्वास के द्वारा मिटाए जा सकते हैं: ''हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं'' (इब्रानियों 10:10); ''... उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए'' (यशायाह 53:5)।

पतरस ने कहा कि यीशु ने ''क्रूस पर'' (2:24) हमारे पाप उठा लिए। यह दिलचस्प है कि जैसे NIV में मसीह का अर्थ क्रूस को ''वृक्ष'' के रूप में कहा जाना चाहिए। दो अन्य अवसरों पर पतरस ने इसी वाक्यांश का इस्तेमाल किया, पहले प्रेरितों 5:30 में और फिर प्रेरितों 10:39 में। पिसिदिया के अन्ताकिया में आराधनालय के सामने अपने प्रवचन में पौलुस ने इसी वाक्यांश का इस्तेमाल किया (प्रेरितों 13:29)। सम्भवतया इस अभिव्यक्ति की कुंजी गलातियों 3:13 में मिलती है, जहां पौलुस ने व्यवस्थाविवरण 21:23 को उद्धृत किया: ''जो कोई काठ पर लटकाया जाता है, वह शापित है'' पौलुस ने घोषणा की कि मसीह ने शाप बनकर हमें व्यवस्था के शाप से छुड़ा लिया है।

सारांश

मसीही लोगों को भक्तिपूर्ण जीवन बिताने और अधीन होकर रहने की पतरस की विनती में

कई विषय शामिल थे। उसने उन्हें संसार में अपने परदेशी होने की स्थिति का स्मरण दिलाया। विरोध और अपमान को बोझ के बजाय चुनौतियों के रूप में देखा जाना चाहिए था। मसीही लोगों को ऐसे जीवन जीने थे, जिनसे क्रूस के शत्रु चकित हों। रोमियों 12:19 के शब्द नहीं तो उनकी भावना इब्रानियों 10:30 में दिखाई देती है कि ''बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा।''

अधीन होने का अर्थ सरकारों तथा मनुष्य के अधिकारों को मान लेना है। यह कहने के लिए कि यदि कोई मसीही किसी व्यक्ति या निगम के लिए काम करता है तो उसे अपना पूरा प्रयास करना चाहिए, हम इस रूपक को और नहीं बढ़ाएंगे। मनुष्य के अधिकार के सामने मसीही व्यक्ति की अधीनता परमेश्वर के प्रति उसकी अधीनता से जुड़ी हुई है। उसके सच्चे प्रयासों और उसके दीन मन के द्वारा, परमेश्वर के नाम को महिमा मिलती है।

1 पतरस की पृष्ठभूमि में कष्ट बहुत दूर कभी नहीं है और 2:18-25 में यह फिर से निकल आता है, इस बार दासता के संदर्भ में। सब बातों की तरह मसीह कष्ट पर विजय पाने के लिए आदर्श है। उसका कष्ट उसके अपने पाप के लिए नहीं था, बल्कि सारी मनुष्य जाति के पापों के लिए था।

2:11-25 को और भले और पवित्र जीवन के लिए खोजपूर्ण प्रेरणा के बिना कौन पढ़ सकता है।